प्रयोगशाला-ग्रंथालय-क्रीडाङ्गण-सङ्गणकयन्त्र-पठनकक्षाप्रभृतीनां भौतिक-शैक्षणिकसहायक-सौविध्ययुतानां परिरक्षणार्थं समुपयोगार्थं च संस्थायां सुनिश्चिता प्रणाली कार्य-पद्धतिश्च विद्यते।

शुभ्रविमलाध्यात्मज्योतिसम्पन्नस्य श्री सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य 22 मार्च 1958 ईस्वीये वर्षे तत्कालीन महामहनीय मुख्यमंत्री श्री डा0 सम्पूर्णानन्दस्य महता प्रयासेन संस्थापना वाराणसेय संस्कृत-विश्वविद्यालयव्याख्यातरूपेणाभवत्। दिसम्बर 1974 ईस्वीये वर्षे विश्वविद्यालये डा0 सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय रूपेण सञ्जातः तस्मादेव कालाद् 'स्वीयसञ्चालननीति' इत्यस्य परिपालनं भवति।

तत्परिप्रेक्ष्ये निर्देशने च सर्वकार्यस्य संञ्चालनं भवति। विविधनिकायानां संरक्षणार्थ संवर्धनार्थञ्च तत्तत्सम्बद्धनिकायप्रमुखाः कुर्वन्ति।

1. प्रयोगशाला – सम्पूर्णानन्दविश्वविद्यालयस्य वेदविभागपरिसरे वैदकीयकर्मकाण्डादिनामनुसन्धानात्मिकैका प्रयोगशाला 'यज्ञशाला इत्याख्या वर्तते। तस्याः यज्ञशालायाः नियन्त्रणं संरक्षणं निभालनं वेदविभागेन क्रियते।
2. ऑनलाइन-संस्कृत-प्रशिक्षण-प्रयोगशाला श्रमणविद्यासंकायस्य बौद्धकक्षे उत्तरप्रदेश सर्वकारसहाय्येन संस्थापितेयं प्रयोगशाला प्रो. रमेशप्रसादमहोदयेन समन्वयकेन निभाल्यते।
3. भाषाविज्ञानप्रयोगशाला- गृहविज्ञान-प्रयोगशाला च तत्तत् विभागेन संरक्षयते।
4. मुख्यभवनम् – अस्यभवनस्य सम्पत्तिविभागः निर्माणविभागश्च परिरक्षणं कुरूतः।
5. ज्योतिषविज्ञान प्रयोगशाला वेधशाला वा ज्योतिषविभागेन परिरक्ष्यते।
6. सर्व शैक्षणिक-प्रशासनिकभवनानां पुस्तकालयानां-प्रकाशनसंस्थानानां-कम्प्यूटरकेन्द्र-स्वास्थ्य-केन्द्रादीनां समये-समये संरक्षणं- संवर्धन- पुनर्निर्माणकार्य च सम्पत्तिविभाग-निर्माणविभागाभ्याम् क्रियते

- क्रीड़ाक्षेत्रम् प्राङ्गणं वा- रङ्गमञ्च भवन-दीक्षान्तमण्डपादीनां सर्वेषां संरक्षणं संपत्ति-निर्माणविभागेन साध्यते।
- बैंक- पोस्ट आफिस- बैंकएटीएम इत्यादीनाम् तत्तत् विभागैः क्रियते।
- छात्रावासादीनां संरक्षणं सम्पत्तिविभागद्वारा तथा निर्माणविभागद्वारा भवति।
- सुरक्षाविभागस्य निभालनं सुरक्षाधिकारी कुलानुशासकस्य निर्देशने सन्ति।
- वाग्-देवी मंदिर- सतीमाईमन्दिर- पञ्चदेवमंदिरादीनाम् संरक्षणं विश्वविद्यालयप्रशासनस्य विभागद्वयेन-संपत्तिनिर्माणेन क्रियते।
- विभिन्न आवासीय- भवनानामपि उपर्युक्तप्रकारेण संरक्षणं क्रियते।
- छात्रसम्बन्धि- कार्याणां नामांकनादेः निभालनं छात्रकल्याणसंकायेन क्रियते।
- स्वास्थ्यकेन्द्रस्य निभालनं छात्रकल्याणसंकायेन क्रियते।

पुनश्च सर्वविभागेषु आवश्यक कार्याणाम्, विकासनं-सम्बर्द्धनं सम्पोषणस्य विश्वविद्यालय प्रशासनद्वारा सम्यग्रूपेण क्रियते।

4.4.2 भौतिक, शैक्षणिक और सहायक सुविधाओं के रखरखाव और उपयोग के लिए स्थापित प्रणालियां और प्रक्रियाएं - प्रयोगशाला, पुस्तकालय, खेल परिसर, कंप्यूटर, कक्षाएं

शैक्षणिक कार्यो में सहायक हेतु संस्था में सुनिश्चित कार्य प्रणाली है। जिसके द्वारा प्रयोगशाला ग्रन्थालय, क्रीड़ाप्रांगण, संगणक यन्त्र, पठन कक्षा इत्यादि भौतिक वस्तुओं का संचालन प्रचालन किया जाता है।

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय 22 मार्च 1958 ई0 वर्ष तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ0 सम्पूर्णानन्द के अथक प्रसास से पाठशाला से वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय के रूप में परिणत हुआ। दिसम्बर 1974 ई0 वर्ष विश्वविद्यालय डॉ0 सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के नाम से जाना गया और आज तक भी इसका नाम सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के नाम से ही जाना जाता है।

शैक्षणिक कार्यो को करने के लिए विविध निकायों में अनेक संरक्षण एवं संबर्धन उन–उन निकायों के द्वारा किये जाते है। जिनका विवरण निम्नवत् है –

1. प्रयोगशाला – सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के वेद विभाग परिसर में वैदिक कर्मकाण्ड आदि से सम्बन्धित अनुसंधान आदि कार्य करने हेतु अनेकों प्रयोगशालाएं है और उन प्रयोगशालाओं का नियन्त्रण तत्तद् विभाग से किया जाता है।
2. ऑनलाईन संस्कृत प्रशिक्षण केन्द्र – श्रमण विद्या संकाय के बौद्ध कक्ष में स्थापित की गयी है। इसका संचालन विश्वविद्यालय के द्वारा किया जाता है।
3. भाषा विज्ञान प्रयोगशाला और गृहविज्ञान प्रयोगशाला तत्तद् विभाग के द्वारा संचालित किया जाता है।
4. मुख्य भवन – मुख्य भवन का संरक्षण तथा परिरक्षण सम्पति विभाग के द्वारा किया जाता है।
5. ज्योतिष विज्ञान प्रयोगशाला अथवा वेधशाला का परीरक्षण ज्योतिष विभाग के द्वारा किया जाता हैं
6. सब शैक्षणिक प्रशासनिक भवनों, पुस्तकालय तथा प्रकाशनों एवं कम्प्यूटर विभाग का कार्यो का पुर्ननिर्माण का कार्य संरक्षण एवं संबर्धन निर्माण तथा सम्पति विभाग के द्वारा किया जाता है।
7. क्रीड़ा मैदान, रंगमंच भवन, दीक्षान्त परिसर का कार्य भी संरक्षण एवं संबर्धन निर्माण विभाग के द्वारा किया जाता है।
8. बैंक, डाकघर,ए.टी.एम. इत्यादि का कार्य तत्तद् विभाग के द्वारा किया जाता है।
9. छात्रावास आदि का संरक्षण के आवश्यक कार्य भी निर्माण तथा सम्पति विभाग के द्वारा किया जाता है।
10. सुरक्षा विभाग का कार्य सुरक्षाधिकारी तथा कुलाशासन के नेतृत्व में किया जाता है।
11. वाग्देवी मंदिर, सती माई मंदिर, पंचदेव मंदिर संरक्षण के आवश्यक कार्य भी निर्माण तथा सम्पति विभाग के द्वारा किया जाता है।
12. विभिन्न आवासीय भवनों के संरक्षण एवं सबर्घन के आवश्यक कार्य भी निर्माण तथा सम्पति विभाग के द्वारा किया जाता है।

13. छात्र सम्बन्धी कार्यो का नामांकन आदि का कार्य छात्रकल्याण के द्वारा किया जाता है।
14. छात्रों के स्वास्थ्य इत्यादि के बारे में भी जो कार्य किये जाते है उनमें छात्रकल्याणसंकाय अध्यक्ष तथा कार्यालय के सभी लोगों की महती भूमिका रहती है।

इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय से सम्बन्धित छात्रों, अध्यापकों, कर्मचारियों के जो विकास एवं सबंर्धन के कार्य किये जाते है वे सब विश्वविद्यालय के प्रशासन द्वारा किये जाते है। इसके कुछ उदाहरण नीचे विनिर्दिष्ट किये जा रहे हैं –

1. छात्रावास

विश्वविद्यालय परिसर में छात्रों की सुविधा के लिए पं. शिव कुमार शास्त्री छात्रावास, पं. राम प्रसाद त्रिपाठी छात्रावास, डॉ. गङ्गानाथ झा छात्रावास, पं. जगन्नाथ उपाध्याय अन्ताराष्ट्रिय छात्रावास, महिला छात्रावास सहित पाँच छात्रावास हैं। इनका संरक्षण मुख्य प्रतिपालक तथा सहायक प्रतिपालकों के निर्देश में विश्वविद्यालय द्वारा समय-समय पर किया जाता है।

2. वेधशाला

मं.मं.पं. सुधाकर द्विवेदी वेधशाला में अनेकों यन्त्र स्थापित हैं। जैसे - षष्ठांशयन्त्र, नाडीवलययन्त्र, क्रान्तिवृत्तयन्त्र, याम्योत्तरधरातलीयतुरीययन्त्र, मकरराशिवलय (सायनग्रहस्पष्टबोधकीयन्त्र) विगंशयन्त्र, चक्रयन्त्र, कर्कराशिवलय (सायनग्रहस्पष्टबोधक) यन्त्र, याम्योत्तरधरातलीयचापवतुरीययन्त्र, वृहत्सम्राटयन्त्र, भारतीयतारामण्डलम इत्यादि, इन यन्त्रों के माध्यम से खगोल पिण्डीय, गतिज्ञान, स्थितिज्ञान इत्यादि घटनाओं का प्रत्यक्षीकरण किया जाता है। इसका संरक्षण ज्योतिष विभाग के द्वारा किया जाता है। इसके अतिरिक्त एक दूसरी यान्त्रिक प्रयोगशाला भी स्थापित है जिसका नाम पं. मुरारी लाल शर्मा यान्त्रिक वेधशाला है। इसमें भी अनेकों यन्त्र स्थापित किये गये हैं।

3. स्वास्थ्य केन्द्र

विश्वविद्यालय के अध्यापक कर्मचारी तथा छात्रों की सुविधा के लिए स्वास्थ्य केन्द्र विश्वविद्यालय में स्थापित है जो प्रातः 10.30 बजे से सायं 4.30 बजे तक अपनी सेवा देता है, और सुविधानुसार एलोपैथिक तथा आर्युवेदिक दवायें मरीजों को प्रदान की जाती हैं।

4. यज्ञशाला

सतत प्रयोगात्मक प्रयोगशाला विश्वविद्यालय में विद्यमान है जहाँ निरन्तर यज्ञ इत्यादि सम्पादित होते रहते हैं। इसी प्रचलित वर्ष में यज्ञशाला में चतुर्वेद स्वाहाकार विश्वकल्याण यज्ञ भी किया जा रहा है। जिसमें चारों वेदों की मन्त्रों से यज्ञ किया जायेगा। इसका संरक्षण विश्वविद्यालय विकास समिति द्वारा किया जाता है।

5. आनलाईन संस्कृत प्रशिक्षण प्रयोगशाला

लोक कल्याण संकल्प पत्र द्वारा 2022 में छात्र अध्यापकों की सुविधा के लिए आन लाईन संस्कृत प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित है। जहाँ 10 विषयों का अध्यापन कराया जाता है तथा अन्य विषयों को ऑनलाईन माध्यम से पढ़ाने की योजना भी प्रस्तावित है। इसके लिए सरकार के द्वारा धन इत्यादि भी प्रदान किया जाता है। ये सर्व विध अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त प्रकोष्ठ हैं इसका आभासीय पटल भी संचालित है जिस पर पाठक पढ़ भी सकते हैं।

6. मुख्य भवन

इसका संरक्षण आवश्यकतानुसार उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा किया गया है तथा विश्वविद्यालय भी इसके रख-रखाव में निरन्तर संलग्न रहता है। यह एक ऐतिहासिक महत्व का भवन है।

7. गृह विज्ञान प्रयोगशाला

इस प्रयोगशाला में गृह कार्य हेतु निर्धारित तथा गृह विज्ञान से सम्बन्धित अन्य सामग्रियाँ उपलब्ध हैं तथा इसका संरक्षण विश्वविद्यालय के गृह विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष के निर्देशन में किया जाता है।

4.4.2 **प्रयोगशाला-ग्रन्थालय-क्रीडाङ्गण-सङ्गणकयन्त्र-पठनकक्ष्या-प्रभृतीनां भौतिक-शैक्षणिक-सहायकसौविध्ययुतानां परिरक्षणार्थं समुपयोगार्थं च संस्थायां सुनिश्चिता प्रणाली कार्यपद्धतिश्च विद्यते।**

प्रयोगशाला-ग्रंथालय-क्रीडाङ्गण-सङ्गणकयन्त्र-पठनकक्षाप्रभृतीनां भौतिक-शैक्षणिकसहायक-सौविध्ययुतानां परिरक्षणार्थं समुपयोगार्थं च संस्थायां सुनिश्चिता प्रणाली कार्य-पद्धतिश्च विद्यते।

शुभ्रविमलाध्यात्मज्योतिसम्पन्नस्य श्री सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य 22 मार्च 1958 ईस्वीये वर्षे तत्कालीन महामहनीय मुख्यमंत्री श्री डा0 सम्पूर्णानन्दस्य महता प्रयासेन संस्थापना वाराणसेय संस्कृत-विश्वविद्यालयव्याख्यातरूपेणाभवत्। दिसम्बर 1974 ईस्वीये वर्षे विश्वविद्यालये डा0 सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय रूपेण सञ्जातः तस्मादेव कालाद् 'स्वीयसञ्चालननीति' इत्यस्य परिपालनं भवति।

तत्परिप्रेक्ष्ये निर्देशने च सर्वकार्यस्य संञ्चालनं भवति। विविधनिकायानां संरक्षणार्थ संवर्धनार्थञ्च तत्तत्सम्बद्धनिकायप्रमुखाः कुर्वन्ति।

1. प्रयोगशाला – सम्पूर्णानन्दविश्वविद्यालयस्य वेदविभागपरिसरे वैदकीयकर्मकाण्डादिनामनुसन्धानात्मिकैका प्रयोगशाला 'यज्ञशाला इत्याख्या वर्तते। तस्याः यज्ञशालायाः नियन्त्रणं संरक्षणं निभालनं वेदविभागेन क्रियते।
2. ऑनलाइन-संस्कृत-प्रशिक्षण-प्रयोगशाला श्रमणविद्यासंकायस्य बौद्धकक्षे उत्तरप्रदेश सर्वकारसहाय्येन संस्थापितेयं प्रयोगशाला प्रो. रमेशप्रसादमहोदयेन समन्वयकेन निभाल्यते।
3. भाषाविज्ञानप्रयोगशाला- गृहविज्ञान-प्रयोगशाला च तत्तत् विभागेन संरक्षयते।
4. मुख्यभवनम् – अस्यभवनस्य सम्पत्तिविभागः निर्माणविभागश्च परिरक्षणं कुरूतः।
5. ज्योतिषविज्ञान प्रयोगशाला वेधशाला वा ज्योतिषविभागेन परिरक्ष्यते।
6. सर्व शैक्षणिक-प्रशासनिकभवनानां पुस्तकालयानां-प्रकाशनसंस्थानानां-कम्प्यूटरकेन्द्र-स्वास्थ्य-केन्द्रादीनां समये-समये संरक्षणं- संवर्धन- पुननिर्माणकार्य च सम्पत्तिविभाग-निर्माणविभागाभ्याम् क्रियते

- क्रीड़ाक्षेत्रम् प्राङ्गणं वा- रङ्गमञ्च भवन-दीक्षान्तमण्डपादीनां सर्वेषां संरक्षणं संपत्ति-निर्माणविभागेन साध्यते।
- बैंक- पोस्ट आफिस- बैंकएटीएम इत्यादीनाम् तत्तत् विभागैः क्रियते।
- छात्रावासादीनां संरक्षणं सम्पत्तिविभागद्वारा तथा निर्माणविभागद्वारा भवति।
- सुरक्षाविभागस्य निभालनं सुरक्षाधिकारी कुलानुशासकस्य निर्देशने सन्ति।
- वाग्-देवी मंदिर- सतीमाईमन्दिर- पञ्चदेवमंदिरादीनाम् संरक्षणं विश्वविद्यालयप्रशासनस्य विभागद्वयेन-संपत्तिनिर्माणेन क्रियते।
- विभिन्न आवासीय- भवनानामपि उपर्युक्तप्रकारेण संरक्षणं क्रियते।
- छात्रसम्बन्धि- कार्याणां नामांकनादेः निभालनं छात्रकल्याणसंकायेन क्रियते।
- स्वास्थ्यकेन्द्रस्य निभालनं छात्रकल्याणसंकायेन क्रियते।

पुनश्च सर्वविभागेषु आवश्यक कार्याणाम्, विकासनं-सम्बर्द्धनं सम्पोषणस्य विश्वविद्यालय प्रशासनद्वारा सम्यग्रूपेण क्रियते।

किञ्चित् उदाहरण विनिर्दिष्टानि सन्ति -

1. छात्रावासः

विश्वविद्यालयपरिसरे छात्राणामावाससौविध्यार्थं पं. शिवकुमारशास्त्रिछात्रावासः पं. रामप्रसादत्रिपाठिछात्रावासः, डॉ. गङ्गानाथझाछात्रावासः पं. जगन्नाथउपाध्याय अन्ताराष्ट्रियछात्रावासः, महिलाछात्रावासः एते पञ्च छात्रावासाः वर्तन्ते। तेषां संरक्षणं मुख्यप्रतिपालक-सहायकप्रतिपालकयोः निर्देशनेन विश्वविद्यालयद्वारा यथाकालं जीर्णोद्धारः निर्माणम् प्रतिरक्षणञ्च भवति।

2. वेधशाला

मं.मं.पं. सुधाकरद्विवेदिवेधशालायां अनेकानि यन्त्राणि संस्थापितानि यथा-षष्ठांशयन्त्रम्, नाडीवलययन्त्रम् क्रान्तिवृत्तयन्त्रम्, याम्योत्तरधरातलीयतुरीययन्त्रम्, मकरराशिवलय (सायनग्रहस्पष्टबोधकीयन्त्रम्) विगंशयन्त्रम् चक्रयन्त्रम्, कर्कराशिवलय (सायनग्रहस्पष्टबोधक) यन्त्रम्, याम्योत्तरधरातलीयचापवतुरीय यन्त्रम्, वृहत्सम्राटयन्त्रम्, भारतीयतारामण्डलम्, एतानि यन्त्राणि अत्र निर्मितानि यैः खगोलीयपिण्डानां गतिज्ञानं, स्थितिज्ञानं घटनाञ्च प्रत्यक्षी क्रियते। अस्य संरक्षणं ज्योतिषविभागाधीनं वर्तते। यतद् व्यतिरिक्तं पं. मुरारीलालशर्मानाम्नी यान्त्रिक वेधशाला अपि वर्तन्ते। तेषां मध्ये वहवः यन्त्राणि उपस्थापितानि सन्ति।

3. स्वास्थ्यकेन्द्रम्

विश्वविद्यालयीयानामध्यापकानां कर्मचारिणां छात्रच्छात्राणां सुविधार्थं स्वास्थ्यकेन्द्रम् संस्थापितमस्ति यच्च प्रातः सार्धदशवादनतः अपराह्णे सार्धचतुर्वादनपर्यन्तं उद्घाटितं भवति। यथासौविध्य एलोपैथिकआयुर्वैदिकौषधयः रूग्णेभ्यः दीयन्ते।

4. यज्ञशाला

सततप्रयोगात्मिकायां यज्ञशालायां अनेके यज्ञाः सम्पादिताः। इदानीं प्रचलितवर्षे संवत्सरन्यापिचतुर्वेदस्वाहाकारविश्वकल्याणयाः प्रवर्तमानः वर्तते। तत्र चतुर्षु वेदेषु यावन्तो मन्त्रः तैः मन्त्रैः स्वाहाकारः भविष्यति। अस्य संरक्षणार्थं एका विश्वविद्यालयविकाससमितिः स्थापित सा च समितिः विश्वविद्यालयविकासार्थं बहुयोगदानं करोति।

5. आनलाईन संस्कृत प्रशिक्षण प्रयोगशाला

लोककल्याणसङ्कल्पपत्र 2022 द्वारा छात्राणामध्यापनसौविध्यप्रदानार्थ आनलाईन (आवासीय पटल) संस्कृतप्रशिक्षणकेन्द्रम् संस्थापितम् तत्र दश विषयाः अध्यापनार्थं निर्धारिताः तत्र सर्व्वकारस्य सहयोगेन राशिः प्रदत्तः वर्तते तेन च धनेन एतत्कार्यं संरक्षणं च क्रियते। एतदर्थं अत्याधुनिकसौविध्ययुतः प्रकोष्ठः सुसज्जितः विद्यते तेन आवासीयपटलद्वारा एतत्कार्यं नियमेन जायते Youtube इत्यत्र तद्द्रष्टुमपि शक्यते।

6. मुख्यभवनम्

एतस्य संरक्षणार्थं राज्य सर्वकारेणस्य आवश्यकतामवलोक्य धनराशिः प्रदीयते ते च धनेन अस्य संरक्षणं क्रियते।

7. गृहविज्ञानप्रयोगशाला

अस्याञ्च प्रयोगशालायांगृहकायार्थं प्रयुज्यमानाः सामग्र्युः वर्तन्ते तत्र छात्राः भोजनादि कार्यं सम्पादनाय नूतनशिक्षाग्रहणं करोति। अस्य च संरक्षणं गृहविज्ञानविभागस्य निर्देशने प्रचलति।